विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान से संबद्ध

सरस्वती शिशु मन्दिर

सी-41, सेक्टर-12, नोएडा

ई- पत्रिका अंक- 44, जून-2024

ज्ञानोदय

☎ 0120-4545608 WEBSITE: ssmnoida.in GMAIL: ssm.noida@gmail.com

विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान से संबद्ध

सरस्वती शिशु मन्दिर ,सी - 41, सेक्टर – 12, नोएडा

मासिक ई- पत्रिका, जून – *2024*

ज्ञानोदय (अंक-44)

संरक्षक मंडल

श्री प्रताप मेहता

श्री दिनेश गोयल

श्री रविन्द्र कुमार

श्री प्रदीप भारद्वाज

श्री सुशील कुमार

श्री असित कुमार त्यागी

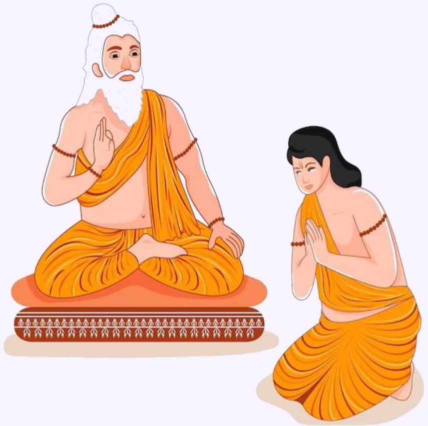

मार्गदर्शक

श्री प्रकाश वीर (प्रधानाचार्य)
सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा

संपादक

श्री लेखराज सिंह (आचार्य)

सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा

संपादक मंडल

श्री दीपक कुमार, ब॰अनु सिंह,

ब॰प्रतीक्षा दीक्षित

अनुक्रमणिका

- संपादकीय
- प्रधानाचार्य जी की कलम से
- कला विषय के क्रियाकलाप
- भैया/बहिनों द्वारा स्वरचित कविताएँ
- लेख-(उत्सव, जयन्ती एवं दिवस)

  विश्व प्रकृति संरक्षण दिवस

  गुरु पूर्णिमा

  बाल गंगाधर तिलक

  चन्द्रशेखर आजाद

  ग्रीष्म ऋतु में कुछ सावधानियाँ
- शिशु वाटिका प्रशिक्षण वर्ग
- विश्व योग दिवस
- विश्व पर्यावरण दिवस
- ग्रीष्मावकाश क्रियाकलाप
- कार्यशाला
- बताओ तो जानें
- पत्रिका अंक प्रश्नोत्तरी

संपादकीय

ज्ञान की अधिष्ठात्री देवी मां शारदे के आराधकों की रचनाओं से सुसज्जित पत्रिका ज्ञानोदय आप सभी को समर्पित करते हुए मैं अति गर्व एवं प्रसन्नता का अनुभव कर रहा हूं ।

साहित्य समाज का दर्पण होता है अतः विद्यालय के भैया/बहिनों के भावों एवं विचारों का प्रकटीकरण उनकी लिखी हुई स्वर रचित कविताओं के माध्यम से ही संभव है। विद्यालय शिशु के सर्वांगीण विकास का एक मुख्य केंद्र है जहां बालक के शारीरिक एवं मानसिक विकास को केंद्र में रखकर विभिन्न क्रियाकलापों का निर्धारण किया जाता है पुस्तकीय ज्ञान के साथ-साथ लेखन के क्षेत्र में भी हमारे बालक अपनी श्रेष्ठ प्रतिभा का प्रदर्शन कर सकें ,ऐसा प्रयास इस ज्ञानोदय पत्रिका के माध्यम से बच्चों के स्वयं रचित कविताओं का निर्माण कराकर करने का प्रयास किया गया है ।

शिक्षा के साथ संस्कार यही हमारी विशेषता है। मानव में देव एवं दानव के गुण विद्यमान रहते हैं। दया, करुणा, अहिंसा, परोपकार, सेवा, सहयोग जैसे दिव्या संस्कारों से समाज संगठित होता है जबकि हिंसा, क्रोध, अन्याय, सस्वार्थ जैसे आसुरी संस्कारों से समाज विघटित होता है। बालक /बालिकाओं में दैवीय गुणों का विकास हम आधारभूत विषयों के माध्यम से करते हैं और इसलिए समय समय पर विभिन्न संतो, महापुरुषों, विद्वानों एवं समाज सेवकों का स्मरण के लिए विभिन्न महापुरुषों की जयंतियों को मानते हैं तथा उनके जीवन से अच्छे संस्कारों को ग्रहण करने का प्रयास करते हैं ।

हम सभी पर चारों ओर के पर्यावरण का बहुत प्रभाव पड़ता है। अतः हमें अपने चारों ओर के पर्यावरण को स्वच्छ एवं सुंदर बनाए रखना चाहिए ।

आगामी अंक और प्रभावी हो इसके लिए आप अपने बहुमूल्य सुझावों से अवश्य अवगत करायें । इसी निवेदन के साथ......

लेखराज सिंह (संपादक)
सरस्वती शिशु मंदिर,नोएडा

प्रधानाचार्य जी की कलम से

जीवनोपयोगी (हमारी आस्थाएँ)

1.- 'सत्यं वद धर्मं चर' (सत्य बोलना धर्म के अनुसार चलना)।

2. 'मातृवत परदारेषु", (पर-स्त्री को माता जैसे देखना)।

3. "परद्रव्येषु लोष्ठवत्', (पर-धन को मिट्टी जैसे देखना)।

4. 'एक सत् विप्राः बहुधा वदन्ति' (ईश्वर एक है नाम अनेक हैं)।

5. विश्व केवल मानव मात्र के लिये नहीं समस्त जीव मात्र के लिये है।

6. हमें जितनी आवश्यकता है उतना मात्र उपभोग करना। अनावश्यक खर्च नहीं करना।

7. चार पुरुषार्थ – (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष)।

8. 'पुनरपि जननं पुनरपि मरणं' (जो पैदा होते हैं वे सब मरते हैं- जो मरते हैं वे सब फिर से जन्म लेते हैं)।

9. जैसा कर्म करते हैं, वैसा फल मिलता है। इसको टाल नहीं सकते।

10. तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा..... (देकर खाना ही धर्म है)।

11. हरा वृक्ष नहीं काटें। फलदार-छायादार वृक्ष लगाएँ।

12. घर मंदिर है, उसको मंदिर जैसे ही रखना।

13. गायत्री मंत्र अत्यंत श्रेष्ठ मंत्र है। चारों वेदों में उसका उल्लेख है।

14. 'शतहस्त समाहर सहस्त्र हस्त संकिर' (सौ हाथों से कमाना, हजार हाथों से बाँटना चाहिए)।

कला विषय के क्रियाकलाप

(फूलों की आकृति) उद्देश्य - बालकों में सृजनात्मक अभिव्यक्ति को बढ़ाना।, भारतीय संस्कृति एवं पारंपरिक कलाओं के प्रति अभिरुचि जागृति करना।

उपयोग में आने वाली सामग्री - एक बड़ा मोती , गुब्बारा, रबर बैंड ,प्लेन पेपर शीट, वाटर कलर, ब्रश, स्केच पेन।

आकृति बनाने की विधि - सर्वप्रथम गुब्बारे के अंदर मोती डालकर, रबड़ बैंड की सहायता से बांधकर फिर गुब्बारे को हल्का सा फूलना है। अब गुब्बारे को वाटर कलर में डिप करके प्लेन पेपर शीट पर दबाकर रखें। एक फूलनुमा आकृति बनकर तैयार हो जाएगी। तत्पश्चात ब्रश की सहायता से पत्तियों एवं तना आदि बनाकर स्केच पेन से फिनिशिंग दें। हमारी एक पेंटिंग बिल्कुल तैयार है।

टेबल कैलेंडर

उद्देश्य- भैया/ बहिनों में समय की इकाइयों को व्यवस्थित करने की एक आदत विकसित करना एवं रचनात्मकता का गुण वि करना।

उपयोग में आने वाली सामग्री- 1. आठ विभिन्न रंगों की A4 शीट। 2. फेविकोल। 3.कैची 4. मोती ,स्टोन्स (सजाने के लिए)

कैलेंडर बनाने की विधि- सर्वप्रथम एक A4 सीट पर चार-चार इंच की तीन लिफाफे बनाकर एक एक इंच की दूरी पर लिखकर चिपका देने हैं। अब चार शीट लेकर उसको 8-8 भागों में डिवाइड करके कट कर लेंगे, और उन पर 1 से 31 तक नंबर लिख लेंगे।अब दो शीट लेनी है और 8 भागों में डिवाइड करके उन पर दिनों के नाम लिख लेने हैं इसके बाद और एक सीट लेकर इसको 12 भागों में डिवाइड करके उसमें महीना के नाम लिख लेने हैं । और अंत में कटिंग किए हुए पेपर्स को अलग-अलग लिफाफे में सेट कर देना है। सबसे ऊपर 2024 का सुंदर टैग बनाकर लगाएंगे,और यह लीजिए हमारा कैलेंडर तैयार है ।अब प्रतिदिन भैया बहनों को इसकी डेट चेंज करनी है । इस गतिविधि को भैया/बहिन पूरे साल चेंज करते रहेंगे जो बहुत ही रुचिकर होगी।

MON
MAY
20
DAY
MONTH
Date

THUR
Day
23
2024
MAY
Date
Month

2024
20
Monday
May
Date
Day
Month

HARSHITA 5 TH F
Riddhima mandal
Amod Jadaun
Rashik kasana
Vedika chauhan
Ravi kant
Aarohi 5f
Atulya pratap 5f

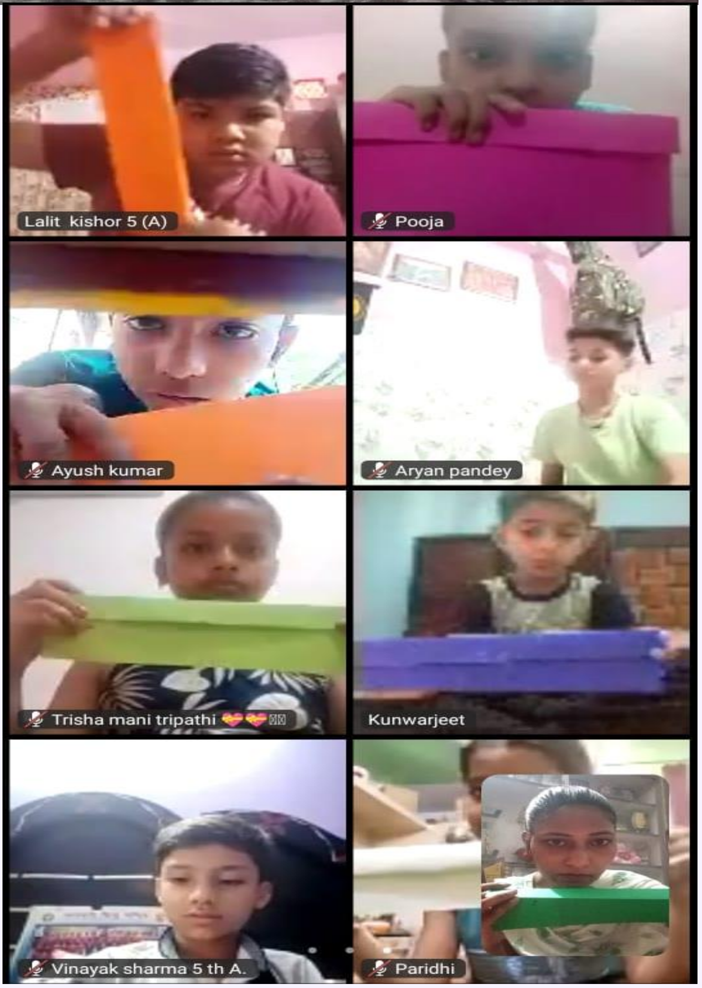
Lalit kishor 5 (A)
Pooja
Ayush kumar
Aryan pandey
Trisha mani tripathi
Kunwarjeet
Vinayak sharma 5 th A.
Paridhi

अल्फाबेटिक ड्राइंग..... उद्देश्य - भैया/बहिन में कल्पना शक्ति का विकास करना, भैया/ बहिनों को विभिन्न आकृतियों का चित्रण आसान तरीके से सिखाना । **R** लेटर से ड्राइंग बनाना।

बनाने के लिए उपयुक्त सामग्री- 1.ड्राइंग पेपर 2.पेंसिल 3.स्केच कलर बनाने की विधि- सर्वप्रथम प्लेन ड्रॉइंग शीट पर हम एक R बना लेते हैं ,अब भैया/ बहिनों इस R से आकृति बनाने का प्रयास करेंगे । और यहां हमने बनाई है- एक रेनकोट में चलती हुई सुंदर लड़की की आकृति। इसी प्रकार हम अलग-अलग लेटर से अलग-अलग आकृतियां बनाने का प्रयास करते हैं। इस गतिविधि को भैया/ बहिनों बहुत ही रुचि के साथ और अलग-अलग आकृतियां अपनी चिंतन शक्ति एवं क्रियात्मकता के साथ बनाने का अभ्यास करते रहेंगे।

क्रियाकलाप :- पेपर कटिंग द्वारा चिड़िया बनवाना।

सामग्री :- रंगीन पेपर, कैंची, फेवीकोल, स्केच पेन।

गतिविधि :- 1. भैया/बहिनों से रंगीन पेपर द्वारा गोल आकृति बनवाना।

2. गोल आकृति को फेवीकोल की सहायता से एक साथ चिपकाना।

3. स्केच की मदद से आंख बनाकर चिड़िया पूर्ण करना।

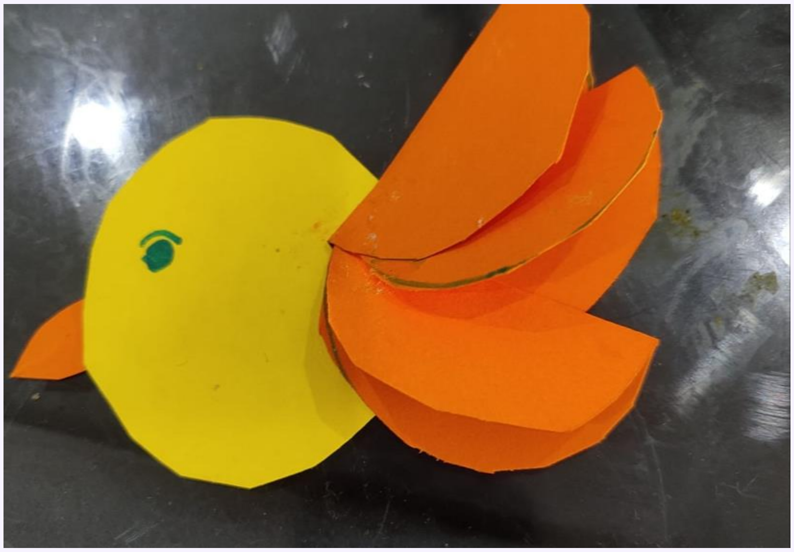

क्रियाकलाप - पेपर फोल्डिंग द्वारा अलमारी बनाना ।

सामग्री - चौकोर पेपर (origami sheet), फेविकोल, स्केच कलर, बिंदी।

गतिविधि -1. एक चौकोर(origami sheet) पेपर को बीच से मोड़ना।

2.पेपर को सीधा करना तथा दोनों कोनों को मुड़ी हुई लाइन पर मिलना।

3.बिंदी तथा स्केच कलर द्वारा अलमारी को सजाना।

Topic -Family Tree
Objectives-
To learn about our Family and Ourself.
Learn about our ancestors and roots.
Materials Required-
A3 sheet, A4 sheet, photographs of Family members, Fevicol, Scissor, Colour, Marker.

रंगीन काग़ज़ द्वारा फूल-

उद्देश्य :- भैया/बहिनों की सृजनात्मक शक्ति का विकास करना।
मापन क्षमता का विकास,इस एक्टिविटी द्वारा भैया/बहिनों के हाथों एवं अंगुलियों की मांसपेशियों का विकास करना।
रंगों एवं आकार का ज्ञान करवाना।

उपयोग की गई सामग्री:-
रंगीन पेस्टल शीट (लाल,पीला, गुलाबी,हरा), फेविकोल,कैंची, पेंसिल,स्केल।

विधि :- रंगीन पेपर को स्केल की सहायता से मापकर वर्गाकार आकार में काटना।
2. पेपर को त्रिकोण आकार में मोड़कर काटना।
3. पेपर के पहले व दूसरे सिरे को आपस में जोड़कर फेविकोल की सहायता से चिपकाना, इस प्रकार फूल बनाकर तैयार करना।

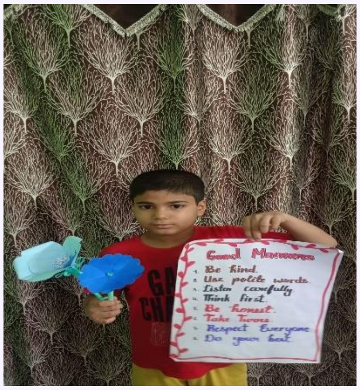

रंगीन काग़ज़ द्वारा डॉल्स बनवाना

उपयोग हेतु सामग्री :- रंगीन काग़ज़,स्केच पैन,एक रूपये का सिक्का, कैंची ।

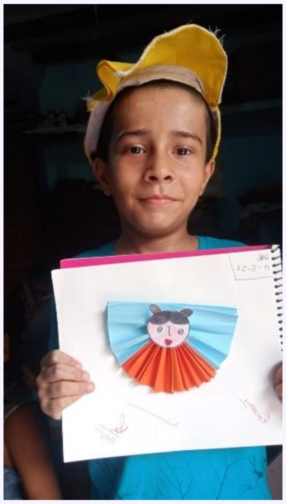

विधि :- A4 साईज की रंगीन शीट को लम्बाई में बीचोंबीच अच्छी तरह मोड़कर एक हिस्सा अलग कर लें ।

किनारे से किनारा मिलाकर मोड़ दें। फिर एक बार और मोड़े

अब जिस तरफ मुड़ा हुआ भाग है वहां ऊपर का छोटा सा सिरा छोड़कर एक रुपये का सिक्का रख पेंसिल से गोला बनाएं। उसी गोले के पास से पेंसिल से लाईन खींचते हुए गुड़िया की फ्राक की आकार की भांति पेंसिल से तिरछी लाइन पेंसिल से खींचे। इसके बाद इसी आकृति के नीचे एक लाइन और खींचे

पेंसिल द्वारा ड्रॉ की गई आकृति को उसी के अनुसार काट लें।
अब इसके सभी मोड़ खोलें तत्पश्चात गुड़िया की आंखें पोर्ट एवं नाम स्केच पेन से बनाएं।
और इसकी फ्रॉक को दूसरे रंगीन पेपर से सजा दें हमारी गुड़िया की। स्टेंसिल तैयार है ।

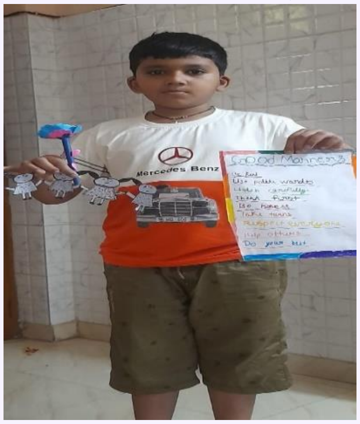

एप्लिकेशन बॉक्स

उद्देश्य :- भैया/बहिनों की सृजनात्मक शक्ति का विकास करना।
रचनात्मक क्रियाकलापों के प्रति उत्साह बढाना , घर में उपलब्ध बेकार वस्तुओं का पुनः उपयोग सीखना।

सामग्री :- जूते का डिब्बा, चार्ट पेपर कलर फेविकोल कैंची सजाने के लिए घर में उपलब्ध सामग्री

विधि :- जूते के डब्बे को चारों तरफ से अच्छे बन्द कर चिपका दें जिससे कि वह कहीं से भी खुले या फटे नहीं। इसको ऊपर से किसी भी रंग के चार्ट पेपर से अच्छी तरह कवर कर दें। इसमें सामने की तरफ से कम से कम 4 इंच का वर्गाकार कांटे यह आपके डिब्बे के आकार पर निर्भर करता है अतः इस के अनुसार ही वह वर्गाकार काटेंगे।काटने की पश्चात इस कटे हुए भाग के चारों ओर अच्छे से किसी भी रंगीन कागज की पट्टी लगाकर सजा देंगे और डिब्बे के चारों ओर भी घर में उपलब्ध सामग्री से अच्छे से सजा देंगे आपका एप्लीकेशन बॉक्स तैयार है।

क्रियाकलाप - कैटरपिलर का क्रियाशील मॉडल

सामग्री - टिशू पेपर, A4 शीट (हरी), स्केच पैन , स्ट्रॉ(2) , ग्लू

गतिविधि - 1. हरे रंग की A4 शीट को पत्ते के आकार में काटे और पत्ते पर एक छोटा स्ट्रॉ लगा दे।
2. टिशू पेपर को पेंसिल पर रोल कर लिया और अंतिम सिरे को ग्लू से चिपक कर पेंसिल बाहर निकाल ली।
3. टिशु को कीट का रूप दे दिया और स्केच पेन से सजा दिया।
4. कीट के दोनों भागों को स्ट्रॉ पर चिपका दिया जिससे किट का क्रियाशील मॉडल बन गया।

भैया/बहिनों द्वारा स्वरचित कविताएँ

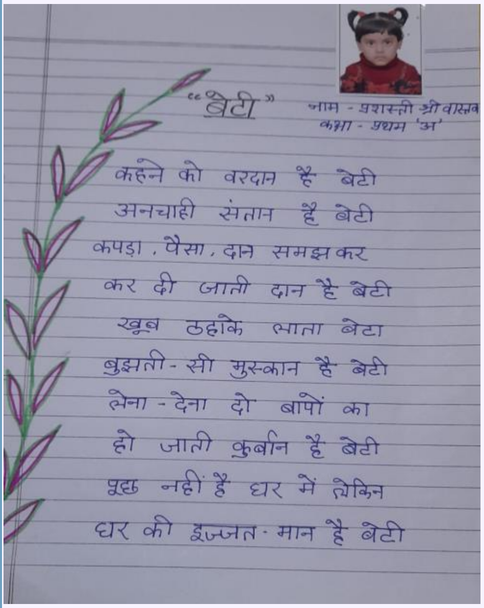

"बेटी"

नाम - प्रशस्ती श्रीवास्तव
कक्षा - प्रथम 'अ'

कहने को वरदान है बेटी
अनचाही संतान है बेटी
कपड़ा, पैसा, दान समझकर
कर दी जाती दान है बेटी
खूब ठहाके लाता बेटा
बुझती-सी मुस्कान है बेटी
लेना-देना दो बापों का
हो जाती कुर्बान है बेटी
पूछ नहीं है घर में लेकिन
घर की इज्जत-मान है बेटी

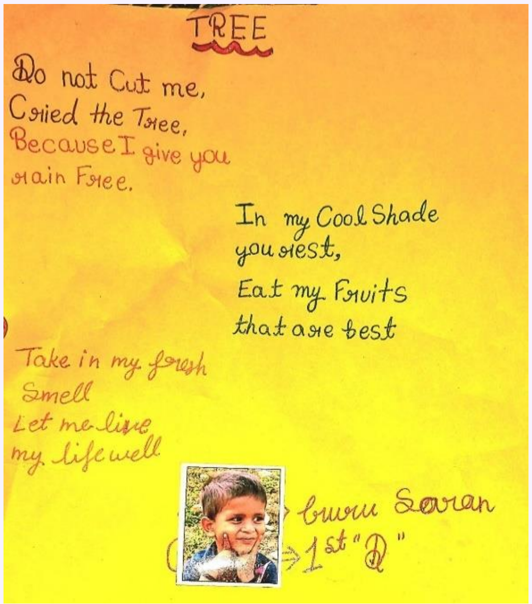

TREE

Do not Cut me,
Cried the Tree,
Because I give you
rain Free.

In my Cool Shade
you rest,
Eat my Fruits
that are best

Take in my fresh
Smell
Let me live
my life well

Ciwu Saran
1st "B"

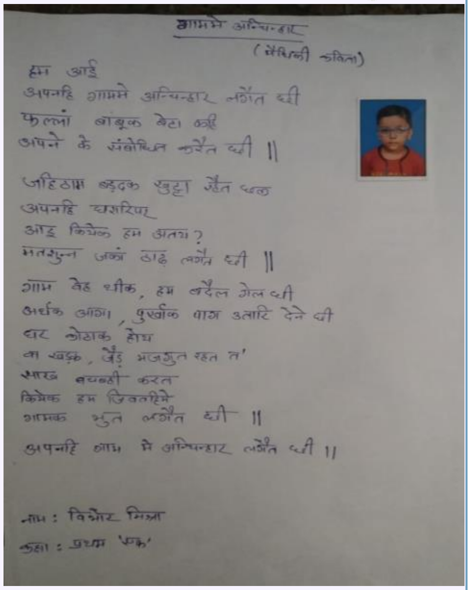

गाममे अन्चिन्हार
(मैथिली कविता)

हम आइ
अपनहि गाममे अन्चिन्हार लगैत छी
फल्लां बाबूक बेटा कहि
अपने के संबोधित करैत छी ॥

जहिठाम बड़दक खुट्टा जैत छल
अपनहि चतरिपर
आइ किएक हम अतय?
मतसुन्न जकां ठाढ़ लगैत छी ॥

गाम वेह थीक, हम बदैल गेल छी
अर्थक आगा, पुर्खाक पाग उतारि देने छी
घर कोठाक होय
वा खड़क, जैं मजगुत रहत त'
सारा बचबी करत
किएक हम जिवतहिमे
गामक भुत लगैत छी ॥

अपनहि गाम मे अन्चिन्हार लगैत छी ॥

नाम : विशोर मिश्रा
कक्षा : प्रथम 'क'

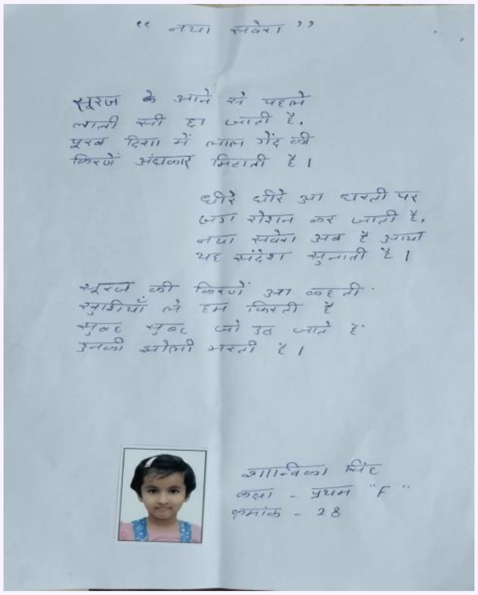

" नया सवेरा "

सूरज के आने से पहले
लाली सी छा जाती है,
पूरब दिशा में लाल गेंद की
किरणें अंधकार मिटाती है।

धीरे धीरे आ धरती पर
जग रोशन कर जाती है,
नया सवेरा अब है आया
यह संदेश सुनाती है।

सूरज की किरणें आ कहती
खुशियाँ ले हम फिरती हैं
सुबह सुबह जो उठ जाते हैं
उनकी झोली भरती है।

ज्ञानिका सिंह
कक्षा - प्रथम "F"
क्रमांक - 28

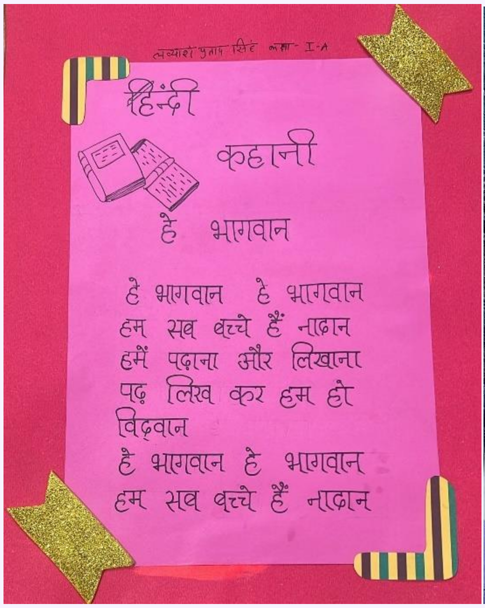

लव्यांश प्रताप सिंह कक्षा - I-A

हिंदी
कहानी

हे भगवान

हे भगवान हे भगवान
हम सब बच्चे हैं नादान
हमें पढ़ाना और लिखाना
पढ़ लिख कर हम हो
विद्वान
हे भगवान हे भगवान
हम सब बच्चे हैं नादान

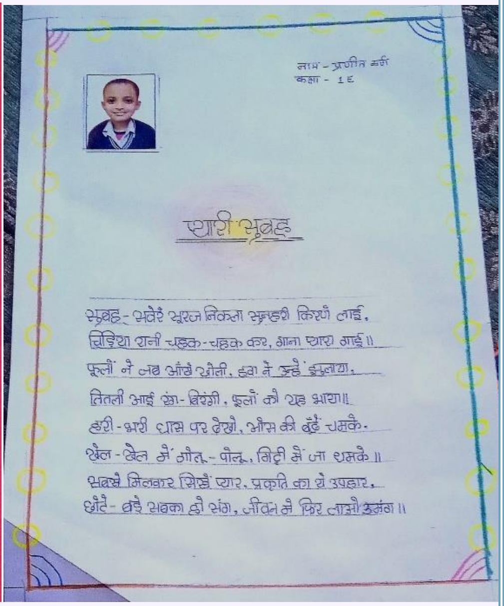

नाम - प्रणीत कर्ण
कक्षा - 1E

प्यारी सुबह

सुबह-सवेरे सूरज निकला सुनहरी किरणें लाई,
चिड़िया रानी चहक-चहक कर, गाना प्यारा गाई॥
फूलों ने जब आँखे खोली, हवा ने उन्हें झुलाया,
तितली आई रंग-बिरंगी, फूलों को यह भाया॥
हरी-भरी घास पर देखो, ओस की बूँदें चमके,
खेल-खेल में गोलू-पोलू, मिट्टी में जा धमके॥
सबसे मिलकर सीखें प्यार, प्रकृति का ये उपहार,
छोटे-बड़े सबका हो संग, जीवन में फिर लाओ उमंग॥

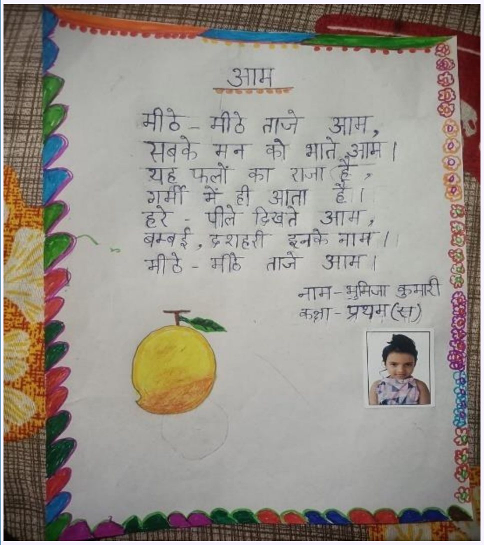

आम

मीठे-मीठे ताजे आम,
सबके मन को भाते आम।
यह फलों का राजा है,
गर्मी में ही आता है।
हरे-पीले दिखते आम,
बम्बई, दशहरी इनके नाम।
मीठे-मीठे ताजे आम।

नाम-भूमिजा कुमारी
कक्षा-प्रथम (स)

मेरा स्कूल

देखो देखो स्कूल खुला है,
चलो पढ़ाई करने को।
झगड़ा छोड़ो वक्त नही है,
अभी लड़ाई करने को॥
अ आ इ ई उ ऊ,
हमको पढ़ते जाना है।
पढ़कर A B C D हमको,
आगे बढ़ते जाना है।
पढ़ लिख कर ही लोग मिलेंगे,
हमें पढ़ाई करने को।
झगड़ा छोड़ो वक्त नही है,
अभी लड़ाई करने को॥
अनपढ़ नहीं रहेंगे अब,
अपना ज्ञान बढ़ाना है।
बात यही समझकर हमको,
सबको यही समझाना है॥
सही समय है जीवन का ये,
अभी पढ़ाई करने को।
पढ़ लिख कर ही लोग मिलेंगे,
हमको बढ़ाई करने को॥
देखो-देखो स्कूल खुला है,
चलो पढ़ाई करने को।
झगड़ा छोड़ो वक्त नहीं है,
अभी लड़ाई करने को॥

नाम - वान्या
कक्षा - I st B

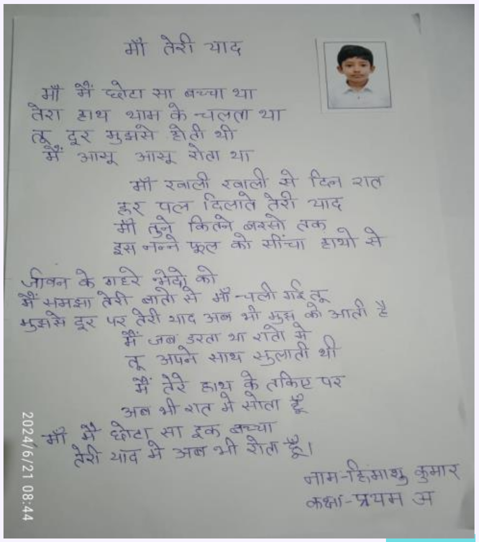

माँ तेरी याद

माँ मैं छोटा सा बच्चा था
तेरा हाथ थाम के चलता था
तू दूर मुझसे होती थी
मैं आसू आसू रोता था
माँ खाली खाली से दिन रात
हर पल दिलाते तेरी याद
माँ तूने कितने बरसो तक
इस नन्हे फूल को सींचा हाथो से
जीवन के गहरे भेदो को
मैं समझा तेरी बातो से माँ चली गई तू
मुझसे दूर पर तेरी याद अब भी मुझ को आती है
मैं जब डरता था रातो मे
तू अपने साथ सुलाती थी
मैं तेरे हाथ के तकिए पर
अब भी रात मे सोता हूँ
माँ मैं छोटा सा इक बच्चा
तेरी याद मे अब भी रोता हूँ।

नाम-हिमांशु कुमार
कक्षा-प्रथम अ

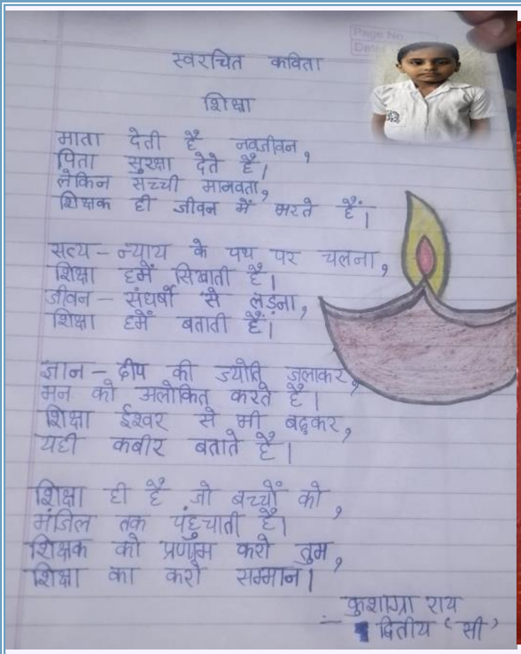

स्वरचित कविता

शिक्षा

माता देती हैं नवजीवन,
पिता सुरक्षा देते हैं,
लेकिन सच्ची मानवता,
शिक्षक ही जीवन में भरते हैं।

सत्य – न्याय के पथ पर चलना,
शिक्षा हमें सिखाती है।
जीवन – संघर्षों से लड़ना,
शिक्षा हमें बताती है।

ज्ञान – दीप की ज्योति जलाकर,
मन को आलोकित करते हैं।
शिक्षा ईश्वर से भी बढ़कर,
यही कबीर बताते हैं।

शिक्षा ही है, जो बच्चों को,
मंजिल तक पहुँचाती है।
शिक्षक को प्रणाम करो तुम,
शिक्षा का करो सम्मान।

कुशाग्रा राय
– द्वितीय 'सी'

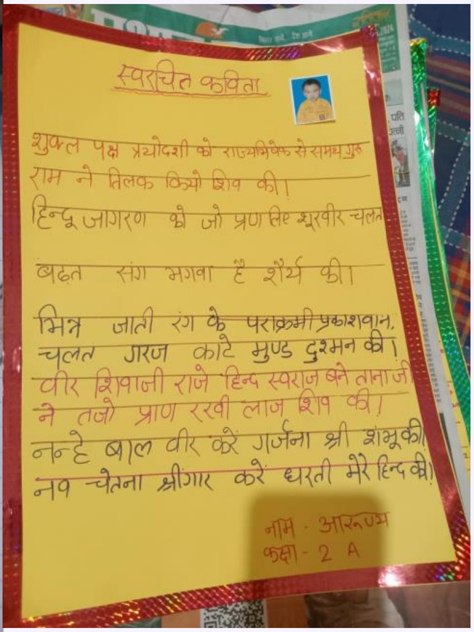

स्वरचित कविता

शुक्ल पक्ष त्रयोदशी को राज्याभिषेक से समयगुरु
राम ने तिलक किया शिव की।
हिन्दू जागरण को जो प्राण दिए शूरवीर चले
बहुत संग भगवा है शौर्य की।
भिन्न जाति रंग के पराक्रमी प्रकाशवान
चलत गरज काटे मुण्ड दुश्मन की।
वीर शिवाजी राजे हिन्द स्वराज बने तानाजी
ने तजो प्राण रखी लाज शिव की।
नन्हे बाल वीर करें गर्जना श्री शम्भू की
नव चेतना श्रृंगार करें धरती मेरे हिन्द की।

नाम - आरुण्य
कक्षा - 2 A

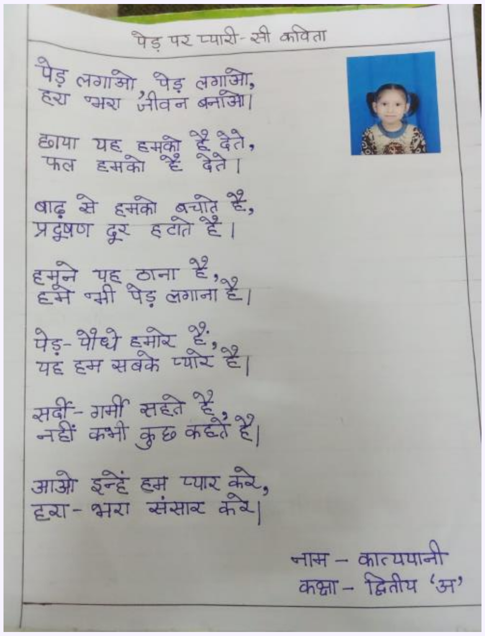

पेड़ पर प्यारी-सी कविता

पेड़ लगाओ, पेड़ लगाओ,
हरा भरा जीवन बनाओ।

छाया यह हमको हैं देते,
फल हमको हैं देते।

बाढ़ से हमको बचाते हैं,
प्रदूषण दूर हटाते हैं।

हमने यह ठाना है,
हमें भी पेड़ लगाना है।

पेड़-पौधे हमारे हैं,
यह हम सबके प्यारे हैं।

सर्दी-गर्मी सहते हैं,
नहीं कभी कुछ कहते हैं।

आओ इन्हें हम प्यार करें,
हरा-भरा संसार करें।

नाम – कात्यायनी
कक्षा – द्वितीय 'अ'

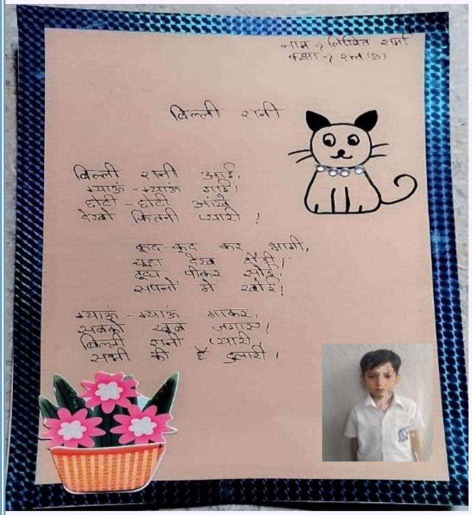

नाम – निश्चित शर्मा
कक्षा – 2nd (D)

बिल्ली रानी

बिल्ली रानी आई,
म्याऊं-म्याऊं गाई।
छोटी-छोटी आंखें
देखो कितनी प्यारी!

कूद-कूद कर भागी,
चूहा देख दौड़ी।
दूध पीकर सोई।
सपनों में खोई।

म्याऊं-म्याऊं गाकर,
सबको खूब जगाए।
बिल्ली रानी प्यारी,
सभी की है दुलारी।

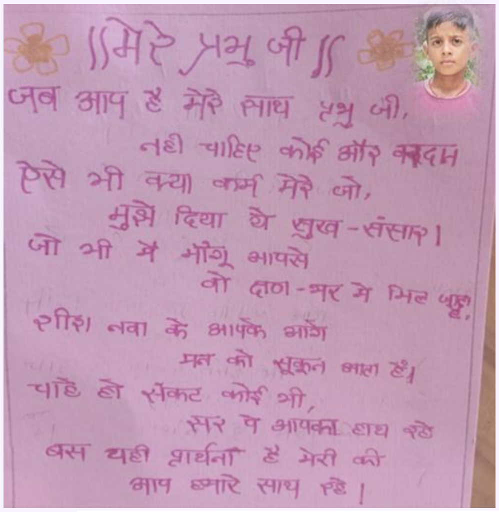

॥मेरे प्रभु जी॥

जब आप है मेरे साथ प्रभु जी,
नहीं चाहिए कोई और कदम
ऐसे भी क्या कर्म मेरे जो,
मुझे दिया ये सुख-संसार।
जो भी मैं माँगू आपसे
वो क्षण-भर में मिल जाए,
शीश नवा के आपके आगे
मन को सुकून आता है।
चाहे हो संकट कोई भी,
सर पे आपका हाथ रहे
बस यही प्रार्थना है मेरी की
आप हमारे साथ रहे।

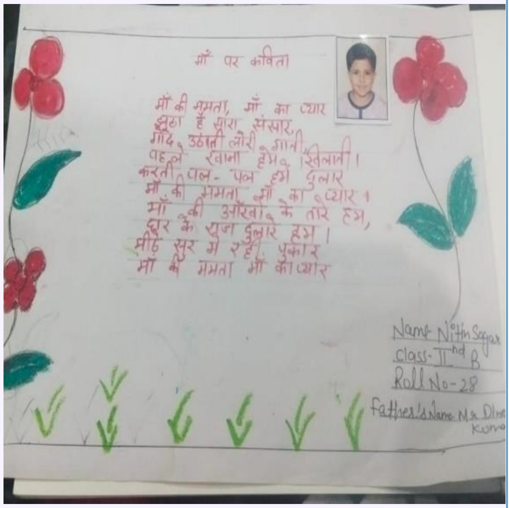

माँ पर कविता

माँ की ममता, माँ का प्यार
झूठा है सारा संसार,
गोद उठाती लोरी गाती,
पहले खाना हमें खिलाती।
करती पल-पल हमें दुलार
माँ की ममता माँ का प्यार।
माँ की आँखों के तारे हम,
घर के राज दुलारे हम।
मीठे सुर में रही पुकार
माँ की ममता माँ का प्यार

Name- Nitin Sagar
Class- IInd B
Roll No- 28
Father's Name- Mr. Dine[sh] Kum[ar]

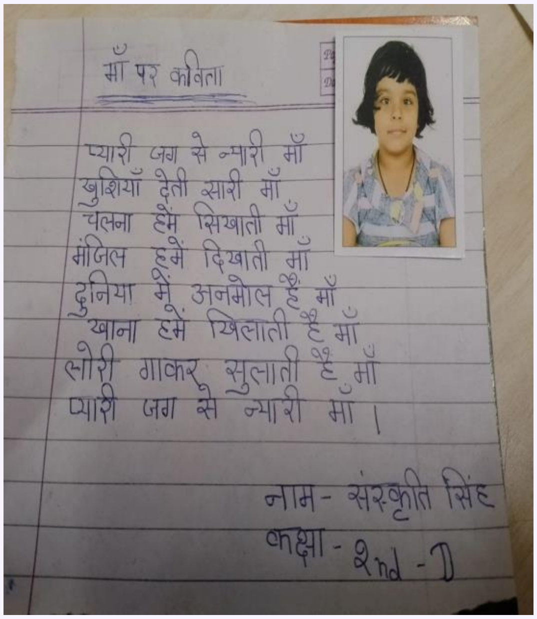

माँ पर कविता

प्यारी जग से न्यारी माँ
खुशियाँ देती सारी माँ
चलना हमें सिखाती माँ
मंजिल हमें दिखाती माँ
दुनिया में अनमोल है माँ
खाना हमें खिलाती है माँ
लोरी गाकर सुलाती है माँ
प्यारी जग से न्यारी माँ।

नाम- संस्कृति सिंह
कक्षा- 2nd - D

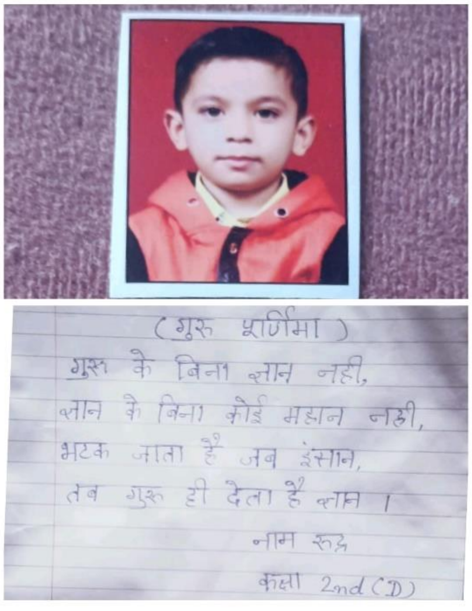

(गुरु पूर्णिमा)

गुरु के बिना ज्ञान नहीं,
ज्ञान के बिना कोई महान नहीं,
भटक जाता है जब इंसान,
तब गुरु ही देता है ज्ञान।

नाम रुद्र
कक्षा 2nd (D)

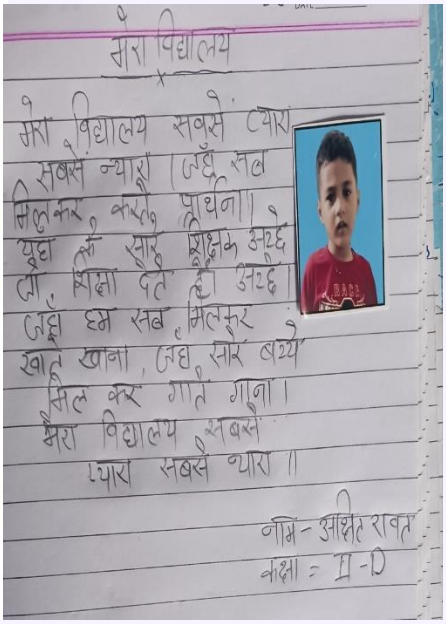

मेरा विद्यालय

मेरा विद्यालय सबसे प्यारा
सबसे न्यारा जहाँ सब
मिलकर, करते प्रार्थना
यहाँ के सारे शिक्षक अच्छे
हैं, शिक्षा देते ही अच्छे
जहाँ हम सब मिलकर
खाते खाना, जहाँ सारे बच्चे
मिल कर गाते गाना।
मेरा विद्यालय सबसे
प्यारा सबसे न्यारा।

नाम - अक्षित रावत
कक्षा - II - D

लेख- उत्सव, जयन्ती एवं दिवस

विश्व प्रकृति संरक्षण दिवस

"प्रकृति है तो अतीत है और जीवन को सुरक्षित करने के लिए प्रकृति को सुरक्षित करना जरुरी है"

हम प्रकृति को मां कहते हैं क्योंकि हम मानते हैं कि इसी ने हमें जन्म दिया है और हमारा भरण-पोषण भी यही करती है। लेकिन धीरे-धीरे हम हमारी मां की तरह प्रकृति का ध्यान नहीं रख रहे हैं, जिसका परिणाम आगे चलकर काफी गंभीर होने वाला है। वन्य जीवन, प्राकृतिक संसाधनों, पेड़ों, महासागरों और पहाड़ों के अलावा समृद्ध खनिज और अनेको सुविधा हमें प्रकृति से मिली है ताकि हम एक स्वस्थ्य और खुशहाल जीवन जी सकें। लेकिन अफसोस की हम इन्हें सम्भालकर रखने के बजाय इन्हें बर्बाद कर रहे हैं।

समय के साथ, मानव जाति ने प्रकृति से मिले संसाधनों को ख़त्म कर दिया है, वन्य जीवन को बर्बाद कर दिया है। यहां तक के जो हवा हमारे लिए जरूरी है, जिसमें सांस लेकर हम जीवित रहते हैं उसे भी प्रदूषित कर दिया है। इसके बावजूद नेचर हमें समय-समय पर संकेत देती रहती है और कहती है कि अब भी समय है सावधान हो जाओ। ऐसे में भी अगर हमने अब पृथ्वी और उसके संसाधनों की रक्षा नहीं की, तो बहुत देर हो जाएगी। इसी लिए हर वर्ष 28 जुलाई, को **विश्व प्रकृति संरक्षण** दिवस मनाया जाता है ताकि लोगों को एक बार पृथ्वी के प्रति उनकी जिम्मेदारियों को याद दिलाया जा सके। आइये जानते हैं कि इस दिन का इतिहास और महत्व।

हर साल 28 जुलाई को विश्व प्रकृति संरक्षण दिवस मनाया जाता है। इस दिन लोग प्रकृति संरक्षण के महत्व के बारे में जागरूकता बढ़ाते हैं। हर दिन हर किसी के छोटे-छोटे योगदान से, हम अपने ग्रह को बचा सकते हैं और उस प्रकृति को फिर से प्राप्त कर सकते हैं, जो हमें विरासत में मिली है। जलवायु परिवर्तन पिछले कई सालों से एक गंभीर मुद्दा रहा है। ग्लोबल वार्मिंग, पॉल्यूशन और विलुप्त होती रहीं प्रजातियां प्रकृति में भारी असंतुलन पैदा कर रही हैं। ऐसे में नेचुरल रिसोर्सेज की रक्षा करना हमारी जिम्मेदारी है। इसके अलावा हमें यह भी कोशिश करनी चाहिए कि हमारी आदतों और आराम की वजह से पृथ्वी पर नकारात्मक प्रभाव न पड़े। हमें सभी को नेचर को समझने और उसके हित में काम करने के लिए प्रोत्साहित करना है। ऐसा करने के लिए कई तरह के कार्यक्रम और सेमिनार का भी आयोजन किया जाता है। हालांकि, हमें बातों से ऊपर उठकर अपने-अपने हिस्से की जिम्मेदारियों को निभाना होगा क्योंकि बूंद-बूंद से सागर बनता है।

"संरक्षण एक महान नैतिक मुद्दा है क्योंकि इसमें राष्ट्र की सुरक्षा और निरंतरता सुनिश्चित करने का देशभक्तिपूर्ण कर्तव्य शामिल है" ।

आचार्या- विधि शर्मा

स०शि०म०,नोएडा

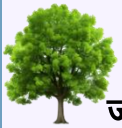

विश्व प्रकृति संरक्षण दिवस

जब हम बात करते हैं प्रकृति संरक्षण की तो सीधे और सरल शब्दों में प्रकृति संरक्षण का तात्पर्य प्रकृति और प्राकृतिक संसाधनों दोनों के उचित उपयोग से है। प्रत्येक संजीव प्राणियों को अपने आवास, स्वच्छ पेयजल और पोषक तत्वों के स्रोतों के लिए उचित स्थान की आवश्यकता होती है।

पारिस्थितिकी तंत्र जो जीवित प्राणियों और उनके समुदाय का एक बहुत बड़ा समुदाय है वे किस तरह आपसी सामाजिक से के साथ काम करते कैसे दूसरे को और अपने पर्यावरण को प्रभावित करते हैं इसकी जानकारी रखना और इसके लिए कार्य करना अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि स्वस्थ समाज की नींव एक स्वस्थ पर्यावरण पर निर्भर करती है। अतः यह सुनिश्चित करना परम अनिवार्य है जिससे हम सभी को यह प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होते रहे क्योंकि ये प्राकृतिक संसाधन ही पृथ्वी पर हमें जीने लायक बनाते हैं । इस पृथ्वी पर मौजूद हवा पानी सूरज की रोशनी और अन्य प्राकृतिक संसाधनों के बिना जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती अतः: इसकी जागरूकता हेतु 28 जुलाई को विश्व प्रकृति संरक्षण दिवस का आयोजन भी किया जाता है जिसके अन्तर्गत पृथ्वी पर लगातार हो रहे बदलावों की पहचान, उनकी निगरानी, और मापने की सुविधा से हमें अवगत करवाया जाता है कि किस तरह से पृथ्वी पर मौजूद अलग-अलग सजीव तंत्र की रक्षा हो सकती है, और ऐसा करके हम पृथ्वी पर खत्म होने की कगार पर पहुंच चुकी प्रजातियों को भी बचा सकते हैं. **प्रकृति और उसके संसाधनों का संरक्षण कैसे करें**

पानी की खपत कम करें- पृथ्वी पर पानी प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है । यही कारण है कि लोग इसका उपयोग करने से पहले बहुत अधिक विचार नहीं करते हैं। हालाँकि, अगर हम इसका इसी गति से उपयोग करते रहे तो भविष्य में हमारे पास उतना पानी नहीं बचेगा। इसलिए, अपने कुछ दैनिक कार्य करते समय नल बंद करना या बचे हुए पानी का पुनः उपयोग पौधों को पानी देने जैसी सरल चीजें इस दिशा में मदद कर सकती हैं।

बिजली का उपयोग कम करें- केवल उतनी ही ऊर्जा का उपयोग करें जितनी आपको आवश्यकता है। इसलिए बिजली के उपयोग को सीमित करने की सलाह दी जाती है। सरल आदतें जैसे कि अपने कमरे से बाहर निकलने से पहले लाइट बंद करना, उपयोग के बाद बिजली के उपकरणों को बंद करना।

कागज़ का उपयोग कम करें- कागज़ का निर्माण सिर्फ़ पेड़ों पर निर्भर करता है। कागज़ के इस्तेमाल को बढ़ाने का मतलब है वनों की कटाई को बढ़ावा देना । आज के समय में यह चिंता का एक मुख्य कारण है। हमेशा सुनिश्चित करें कि आप केवल उतना ही कागज़ इस्तेमाल करें जितना ज़रूरी हो।

नवीन कृषि पद्धतियों का उपयोग करें सरकार को मिश्रित फसल, फसल चक्र जैसी विधियों के बारे में जागरूक करना चाहिए। साथ ही, सरकार को कीटनाशकों, कीटनाशकों के न्यूनतम उपयोग के बारे में भी किसानों को बताना चाहिए।

इसके अलावा, ज़्यादा से ज़्यादा पेड़ लगाना भी ज़रूरी है। वायु प्रदूषण को कम करने में योगदान देना ज़रूरी है। हमें प्रकृति के संरक्षण के लिए साझा परिवहन का इस्तेमाल करना चाहिए और वर्षा जल संचयन प्रणाली को अपनाना चाहिए। प्रकृति में वह सब कुछ शामिल है जो हमारे आस-पास है। पेड़, जंगल, नदियाँ, नाले, मिट्टी, हवा सभी प्रकृति का हिस्सा हैं। प्रकृति और उसके संसाधनों को बनाए रखना बहुत ज़रूरी है। इसलिए, पृथ्वी पर जीवन की निरंतरता के लिए यह अत्यंत आवश्यक है। केवल मनुष्य ही है जो अपनी शक्ति और क्षमता के आधार पर प्रकृति को उसके शुद्धतम रूप में बचा सकता है।

आचार्या सीमा शर्मा

स०शि०म०,नोएडा

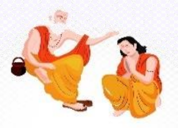

गुरु पूर्णिमा

गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णुः , गुरु देवो महेश्वरः। गुरुः साक्षात् परब्रह्म , तस्मै श्री गुरुवे नमः ।।

हमारे जीवन में गुरु का विशेष महत्व है भारतीय संस्कृति में गुरु को भगवान से भी बढ़कर माना जाता है। संस्कृत में 'गु' का अर्थ होता है अंधकार (अज्ञान)एवं 'रू' का अर्थ होता है प्रकाश (ज्ञान) गुरु हमें अज्ञान रूपी अंधकार से ज्ञान रुपए प्रकाश की ओर ले जाते हैं ।गुरु को महत्व देने के लिए ही महान गुरु वेदव्यास जी की जयंती पर गुरु पूर्णिमा का पर्व मनाया जाता है ।

इसी दिन भगवान शिव द्वारा अपने शिष्यों को ज्ञान दिया गया था। आषाढ़ मास की पूर्णिमा के दिन गुरु पूर्णिमा का उत्सव मनाया जाता है। माता-पिता अपने बच्चों को संस्कार देते हैं पर गुरु सभी को अपने बच्चों के समान मानकर ज्ञान देते हैं गुरु और शिष्यों का सम्मान करना हमारा कर्तव्य है। एक विद्यार्थी के जीवन में गुरु अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है ।गुरु के ज्ञान और संस्कार के आधार पर ही उसका शिष्य ज्ञानी बनता है।

गुरु की मेहता को महत्व देते हुए प्राचीन धर्म ग्रंथो में भी गुरु को ब्रह्मा विष्णु और महेश के समान बताया है ।एक व्यक्ति गुरु का ऋण कभी नहीं चुका पाता है। गुरु मंदबुद्धि शिष्य को भी एक योग्य व्यक्ति बना देते हैं।

संस्कार और शिक्षा जीवन का मूल स्वभाव होता है। इससे वंचित रहने वाला व्यक्ति जीवन में बहुत से अवसर खो देता है। गुरु के ज्ञान का कोई तोल नहीं होता है। हमारा जीवन गुरु के अभाव में शून्य होता है। गुरु अपने शिष्यों से कोई स्वार्थ नहीं रखते हैं। उनका उद्देश्य सभी का कल्याण ही होता है।

गुरु पूर्णिमा जैसे दिवस पर हमें हमारी भारतीय संस्कृति से जोड़ते हैं। जिससे हम अपनी जड़ों से जुड़े रहकर आधुनिकता की ओर बढ़ते हैं तथा सन्मार्ग पर चलते हुए जीवन में उन्नति को प्राप्त करते हैं ।

आचार्या - इन्दु गुप्ता

स०शि०म०,नोएडा

गुरु पूर्णिमा

गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णु , गुरु देवो महेश्वरः ।
गुरु साक्षात् परब्रह्म , तस्मै श्री गुरुवे नमः ॥

सनातन धर्म की परंपरा के अनुसार आषाढ़ की शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा को गुरु पूर्णिमा का पर्व मनाया जाता है। सनातन धर्म की संस्कृति के अनुसार यह आध्यात्मिक या शिक्षकों को समर्पित परम्परा है । जिन्होंने कर्मयोग आधारित व्यक्तित्व विकास और शिष्यों को प्रबुद्ध करने के लिए बहुत कम अथवा बिना किसी मौद्रिक खर्चे के अपनी बुद्धिमता को साझा किया।

जीवन में गुरु का महत्त्व-

सामाजिक नैतिक और बौद्धिक प्रगति के लिए प्रत्येक व्यक्ति के पास एक गुरु का होना जरूरी है जब तक गुरु की कृपा प्राप्त नहीं होती तब तक कोई भी मनुष्य अज्ञानरूपी अंधकार से निकल नहीं सकता। कबीरदास ने अग्रलिखित दोहे में गुरु की महिमा का वर्णन करते हुए कहा है।

गुरू गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागूं पांय।बलिहारी गुरू आपनो गोविन्द दियो बताय ।। अर्थात गुरु और गोविंद (भगवान) एक साथ खड़े हो तो किसे प्रणाम करना चाहिए गुरु को या गोविंद को?

ऐसी स्थिति हो तो गुरु के चरणों में ही प्रणाम करना चाहिए क्योंकि उनके ज्ञान से ही आपको गोविंद के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हो रहा है।

आषाढ़ की पूर्णिमा ही क्यों? आषाढ़ की पूर्णिमा को चुनने के पीछे गहरा अर्थ है कि गुरु तो पूर्णिमा के चंद्रमा की तरह है जो पूर्ण प्रकाशमान है और शिष्य आषाढ़ के बादलों की तरह आषाढ़ में चंद्रमा बादलों से घिरा रहता है जैसे बादल रूपी शिष्यों से गुरु घिरे हुए हों जो अंधेरे से घिरे वातावरण में भी प्रकाश जगा सके तो ही गुरु पद की श्रेष्ठता है। इसलिए इसमें आषाढ़ की पूर्णिमा का महत्व है जो गुरु की तरफ भी इशारा करता है और शिष्य की तरफ भी।

भारतवर्ष में कई विद्वान गुरु हुए हैं किंतु महर्षि वेदव्यास प्रथम विद्वान थे जिन्होंने सनातन धर्म (हिंदू धर्म) के चारों वेदों की व्याख्या की थी। गुरु पूर्णिमा का पर्व बौद्ध के अनुयायियों द्वारा उत्तर प्रदेश के सारनाथ में अपने पहले पांच शिष्यों को गौतम बुद्ध के पहले उपदेश की याद में मनाया जाता है।

सिख धर्म में भी गुरु को भगवान माना जाता है इस कारण गुरु पूर्णिमा सिख धर्म का भी त्यौहार बन चुका है। वह गुरु जो ज्ञान-अज्ञान का विभेद कर सके,उसका विस्तृत ज्ञान इतना हो कि वह संपूर्ण परिस्थितियों को जानने वाला हो तभी जाकर मार्गदर्शक बन सकता है। उसके ज्ञान का रोपण आप में तभी हो सकता है जब उसके प्रति आप में अपार श्रद्धा हो। श्रद्धा वही है जिसके सहारे एकलव्य द्रोणाचार्य की प्रतिमा को असली समझ कर कुशल धनुर्धर बने और रामकृष्ण परमहंस जी श्रद्धा से पत्थर की महाकाली की प्रतिमा को भोग लगाते थे श्रद्धा प्राण तत्व होता है समर्पण का। इसको नेपाल भूटान में हिंदू जैन और बौद्ध धर्म के अनुयाई उत्सव के रूप में मनाते हैं।

गुरु का आशीर्वाद सबके लिए कल्याणकारी व ज्ञानवर्धक होता है इसलिए इस दिन गुरु पूजन के उपरांत गुरु का आशीर्वाद प्राप्त करना चाहिए।

आचार्य- रमेशचंद्र जी

स०शि०म०,नोएडा

बाल गंगाधर तिलक

भारत माता के आंचल में पल बढ़कर बहुत विभूतियों ने राष्ट्र की सेवा में अपना जीवन लगा दिया । ऐसे ही एक महान विभूति का जन्म 23 जुलाई सन् 1856 को महाराष्ट्र की रत्नागिरी जिले के चिखली गांव में हुआ। उन विभूति का नाम केशव बाल गंगाधर तिलक था। उनके पिता अध्यापक थे एवं संस्कृत के विद्वान थे । उन्हीं के मार्गदर्शन में तिलक जी ने विद्या ग्रहण की।

16 वर्ष की अवस्था में उनके पिताजी का निधन हो गया था । इसके पश्चात उनकी माता जी का भी निधन हो गया। तिलक पढ़ने में कुशाग्र थे एवं हमेशा अपनी कक्षा में प्रथम आते थे।वह संस्कृत, हिंदी ,धर्म ,गणित ,खगोल शास्त्र एवं इतिहास के विद्वान थे।उन्होंने सन् 1877 में पुणे के डेक्कन कॉलेज से एल. एल. बी की डिग्री प्राप्त की । उन्होंने अपने पिता की भांति अपना जीवन एक अध्यापक के रूप में शुरू किया।

वे एक अच्छे वक्ता,निर्भीक पत्रकार, विचारक एवं दार्शनिक थे। सामाजिक उत्थान के लिए उन्होंने कई कदम उठाए। जिसमें गणेशोत्सव एवं शिवाजी उत्सव प्रसिद्ध है। कई वर्षों बाद आज भी ये उत्सव धूमधाम से मनाये जाते हैं। पहले लड़कियों की शादी कम उम्र में ही कर दी जाती थी। जिसमें सुधार कर उनकी आयु सीमा बढ़ाने में उनकी अहम भूमिका रही। बाल गंगाधर तिलक ने जेल में रहकर गीता रहस्य की रचना की।

उन्होंने "मराठा दर्पण" एवं "केसरी" नामक समाचार पत्र की शुरुआत की। इसके अलावा उन्होंने कई पुस्तकों की रचना की एवं स्कूल कॉलेजों की स्थापना भी करवाई। सन 1890 में वे भारतीय कांग्रेस में शामिल हुए। वह राष्ट्रप्रेमी एवं कट्टर देशभक्त थे। उन्होंने गांधी जी के साथ भी काम किया लेकिन उनकी विचारधारा अलग थी ।

कांग्रेस दो खेमों में बटी हुई थी। "उदारवादी एवं गरम पंथी" इन्होंने ब्रिटिश शासन के खिलाफ

"स्वराज मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है "का नारा दिया और ब्रिटिश शासन को झकझोर कर रख दिया।

उन दिनों राष्ट्रवादी गरमपंथी नेताओं की तिकडी बनी   जो लाला लाजपत राय ,बाल गंगाधर तिलक

विपिन चन्द्र पाल के नाम से प्रसिद्ध हुई।

1 अगस्त1920 को 64 वर्ष की आयु में उनका निधन मुंबई में हुआ। उनकी लोक परायणता एवं कर्तव्य निष्ठा का ही परिणाम है कि उन्हें लोकमान्य की उपाधि दी गई।

आज की पीढ़ी खासकर युवा एवं छात्रों को लोकमान्य सरीखे कर्तव्यनिष्ठ , देशभक्त , त्यागी एवं निर्भीक महापुरुषों से प्रेरणा लेनी चाहिए।

आचार्या - किरन सिंह

स०शि०म०,नोएडा

बाल गंगाधर तिलक

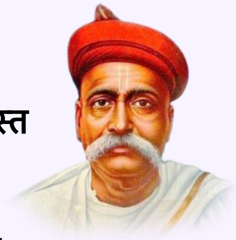

बाल गंगाधर तिलक (अथवा लोकमान्य तिलक का जन्म 23 जुलाई 1856 और मृत्यु 1 अगस्त 1920 को हुई थी।) वो एक भारतीय राष्ट्रवादी, शिक्षक, समाज सुधारक, वकील और एक स्वतंत्रता सेनानी थे। तिलक रत्नागिरी गांव से निकलकर आधुनिक कालेज में शिक्षा पाने वाले भारतीय पीढ़ी के पहले पढ़े लिखे नेता थे।

इन्होंने कुछ समय तक स्कूल और कॉलेजों में गणित पढ़ाया। अंग्रेजी शिक्षा के ये आलोचक थे। इस वजह से ये मानते थे कि यह भारतीय सभ्यता के प्रति अनादर सिखाती है। इन्होंने दक्कन शिक्षा सोसायटी की स्थापना की ताकि भारत में शिक्षा का स्तर सुधरे। शिक्षा का स्तर सुधारने की दिशा में भी काफी काम किया। ये भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के पहले लोकप्रिय नेता हुए। इन्हें हिन्दू राष्ट्रवाद का पिता भी कहा जाता है।

लोकमान्य तिलक ने सबसे पहले ब्रिटिश राज के दौरान 'पूर्ण स्वराज' की मांग उठाई। उन्होंने जनजागृति का कार्यक्रम पूरा करने के लिए महाराष्ट्र में गणेश उत्सव तथा शिवाजी उत्सव सप्ताह भर मनाना प्रारंभ किया। इन त्योहारों के माध्यम से जनता में देशप्रेम और अंग्रेजों के अन्यायों के विरुद्ध संघर्ष का साहस भरा गया तिलक ने राष्ट्रीय शिक्षा पर जोर दिया है, गोखले की तरह उन्होंने भी अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा की सिफारिश की थी ।

तिलक एक यथार्थवादी राजनीतिज्ञ थे और चाहते थे कि शिक्षा व्यक्तियों और समाज के सामंजस्यपूर्ण विकास के लिए एक माध्यम के रूप में काम करे। तिलक चाहते थे कि भारत एक शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में संगठित हो, एक हो और एक प्रचण्ड, एकीकृत और केन्द्रीय शक्ति के रूप में एक ही धारा में बहे ।

लोकमान्य तिलक ने अंग्रेजी शासन की क्रूरता और भारतीय संस्कृति के प्रति हीन भावना की बहुत आलोचना की। उन्होंने माँग की कि ब्रिटिश सरकार तुरन्त भारतीयों को पूर्ण स्वराज दे। केसरी में छपने वाले उनके लेखों की वजह से उन्हें कई बार जेल भेजा गया।

अपने समर्पण, साहस, और निष्ठा के बल पर, लोकमान्य तिलक ने भारतीय स्वतंत्रता का सपना साकार किया और देश को एक स्वतंत्र और समर्पित भारतीय समाज की दिशा में एक कदम आगे बढ़ाया। उनकी महानता और वीरता हमें हमेशा प्रेरित करेगी और उनकी यादें हमें सच्ची स्वतंत्रता के महत्व को समझाएंगी।

आचार्य- दीपक कुमार

स०शि०म०,नोएडा

चन्द्रशेखर आजाद

परिचय : भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के महानायक एवं लोकप्रिय स्वतंत्रता सेनानी चंद्रशेखर आजाद का जन्म 23 जुलाई, 1906 को मध्यप्रदेश के झाबुआ जिले के भाबरा नामक स्थान पर हुआ। उनके पिता का नाम पंडित सीताराम तिवारी एवं माता का नाम जगदानी देवी था। उनके पिता ईमानदार, स्वाभिमानी, साहसी और वचन के पक्के थे। यही गुण चंद्रशेखर को अपने पिता से विरासत में मिले थे।

विवरण : चंद्रशेखर आजाद 14 वर्ष की आयु में बनारस गए और वहां एक संस्कृत पाठशाला में पढ़ाई की। वहां उन्होंने कानून भंग आंदोलन में योगदान दिया था। 1920-21 के वर्षों में वे गांधीजी के असहयोग आंदोलन से जुड़े। वे गिरफ्तार हुए और जज के समक्ष प्रस्तुत किए गए। जहां उन्होंने अपना नाम 'आजाद', पिता का नाम 'स्वतंत्रता' और 'जेल' को उनका निवास बताया। उन्हें 15 कोड़ों की सजा दी गई। हर कोड़े के वार के साथ उन्होंने, 'वन्दे मातरम्' और 'महात्मा गांधी की जय' का स्वर बुलंद किया। इसके बाद वे सार्वजनिक रूप से आजाद कहलाए। क्रांतिकारी चंद्रशेखर आजाद का जन्मस्थान भाबरा अब 'आजादनगर' के रूप में जाना जाता है।

17 दिसंबर, 1928 को चंद्रशेखर आजाद, भगत सिंह और राजगुरु ने शाम के समय लाहौर में पुलिस अधीक्षक के दफ्तर को घेर लिया और ज्यों ही जे.पी. साण्डर्स अपने अंगरक्षक के साथ मोटर साइकिल पर बैठकर निकले तो राजगुरु ने पहली गोली दाग दी, जो साण्डर्स के माथे पर लग गई वह मोटरसाइकिल से नीचे गिर पड़ा। फिर भगत सिंह ने आगे बढ़कर 4-6 गोलियां दाग कर उसे बिल्कुल ठंडा कर दिया। जब साण्डर्स के अंगरक्षक ने उनका पीछा किया, तो चंद्रशेखर आजाद ने अपनी गोली से उसे भी समाप्त कर दिया। इतना ही नहीं लाहौर में जगह-जगह परचे चिपका दिए गए, जिन पर लिखा था- लाला लाजपतराय की मृत्यु का बदला ले लिया गया है। उनके इस कदम को समस्त भारत के क्रांतिकारियों द्वारा खूब सराहा गया।

उपसंहार : अलफ्रेड पार्क, इलाहाबाद में 1931 में उन्होंने रूस की बोल्शेविक क्रांति की तर्ज पर समाजवादी क्रांति का आह्वान किया। उन्होंने संकल्प किया था कि वे न कभी पकड़े जाएंगे और न ब्रिटिश सरकार उन्हें फांसी दे सकेगी।

इसी संकल्प को पूरा करने के लिए उन्होंने 27 फरवरी, 1931 को इसी पार्क में स्वयं को गोली मारकर मातृभूमि के लिए प्राणों की आहुति दे दी। चंद्रशेखर आज़ाद एक महान स्वतंत्रता सेनानी थे जिन्होंने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होंने अपनी कठोरियों और साहस से भारतीय जनता को स्वतंत्रता की ओर आगे बढ़ाया। चंद्रशेखर आज़ाद का जन्म 23 जुलाई 1906 को आज़ादी के वीर स्वतंत्रता सेनानी स्वरूप का गांव है जो वर्धा, मध्य प्रदेश में स्थित है, में हुआ था। उनका वास्तविक नाम क्षितिज और तोडैराम था, लेकिन उन्होंने 'आज़ाद' का परिचय बदल कर लिया था।

चंद्रशेखर आज़ाद का संघर्ष और समर्पण उन्हें एक सहज और प्रेरणादायक व्यक्तित्व बनाता है। उनकी निष्ठा और पुरुषार्थ से उन्होंने लोगों को आत्मनिर्भर और स्वतंत्र बनाने के लिए प्रेरित किया। आज़ाद का विचारशीलों और न्यायप्रिय स्वभाव उन्हें एक महान सुधारक के रूप में स्थापित करता है।

आज़ाद की विचारधारा और आदर्श आज भी हमें प्रेरित करते हैं। उनकी दृढ़ता, साहस और निष्ठा शानदार उदाहरण हैं जो हमें स्वतंत्र और समृद्ध भविष्य की दिशा में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करते हैं।

आज़ाद की यात्रा एक प्रेरणादायक सफर रही है, जो मैं और आप जैसे हर भारतीय के लिए एक महत्वपूर्ण संदेश लेकर आ रही है। उनकी सफलता और समर्पण हमें सिखाते हैं कि कोई भी मुश्किल या परिस्थिति हो, अगर हम मेहनत और संकल्प से काम करें तो हम सभी कुछ हासिल कर सकते हैं।

चंद्रशेखर आज़ाद जैसे महान व्यक्तित्व हमें स्वतंत्रता और साहस के महत्व को समझने के लिए प्रेरित करते हैं। उनकी विभिन्नता और उनका समर्पण हमें यह सिखाते हैं कि हमें अपने सपनों के लिए समर्पित रहना चाहिए और किसी भी संघर्ष को हराने के लिए तैयार रहना चाहिए। आज़ाद ने अपने जीवन के हर क्षण में भारत की आज़ादी के लिए समर्पितता और साहस दिखाया। उनकी ईमानदारी, निष्ठा और समर्पण की भावना हमें उनके जीवन से एक महत्वपूर्ण सीख सिखाती है कि सच्चे समर्पण से ही हम सच्चे स्वतंत्रता को प्राप्त कर सकते हैं।

आचार्या- सरोज रावत

स०शि०म०,नोएडा

चन्द्रशेखर आजाद

चंद्रशेखर आजाद का जन्म 23 जुलाई,1906 को मध्यप्रदेश के भाबरा गांव में हुआ था। उनके सम्मान में अब इस गांव का नाम बदलकर चंद्रशेखर आजाद नगर कर दिया गया है। मूल रूप से उनका परिवार उत्तरप्रदेश के उन्नाव जिले के बदरका गांव से था। लेकिन पिता सीताराम तिवारी को अकाल के कारण अपने पैतृक गांव को छोड़कर मध्यप्रदेश के भाबरा का रुख करना पड़ा। यह भील जनजाति बहुल इलाका है,और इसी वजह से बालक चंद्रशेखर को भील बालकों के साथ धनुर्विद्या और निशानेबाजी करने का खूब मौका मिला और निशानेबाजी उनका शौक बन गया।

बालक चंद्रशेखर बचपन से ही विद्रोही स्वभाव के थे।पढ़ाई से ज्यादा उनका मन खेल गतिविधियों में लगता था। इसके बाद वह घटना घटी जिसने पूरे हिन्दुस्तान को हिला कर रख दिया। जलियांवाला बाग हत्याकांड ने बालक चंद्रशेखर को झकझोर कर रख दिया और उन्होंने ईंट का जवाब पत्थर से देने की ठान ली।

जलियांवाला बाग कांड के बाद चंदशेखर को समझ में आया कि आजादी बात से नहीं बंदूक से मिलेगी। हालांकि उन दिनों महात्मा गांधी और कांग्रेस का अहिंसात्मक आंदोलन अपने चरम सीमा पर था और पूरे देश में उन्हें भारी समर्थन मिल रहा था। आजाद ने भी महात्मा गांधी के द्वारा चलाए जा रहे असहयोग आन्दोलन में हिस्सा लिया और सजा पाई लेकिन चौरा-चोरी कांड के बाद जब आंदोलन वापिस लिया गया तो आजाद का कांग्रेस से मोहभंग हो गया। चंद्रशेखर आजाद ने बनारस की ओर रुख किया।

बनारस उन दिनों भारत में क्रांतिकारी गतिविधियों का केंद्र हुआ करता था। बनारस में वह देश के महान क्रांतिकारी मन्मथनाथ गुप्त और प्रणवेश चटर्जी के सम्पर्क में आए।इन नेताओं से वे इतने प्रभावित हुए कि वे क्रांतिकारी दल हिन्दुस्तान प्रजातंत्र संघ के सदस्य बन गये। काकोरी काण्ड से कौन नहीं परिचित है जिसमें देश के महान क्रांतिकारियों रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाकउल्ला खां, राजेन्द्र नाथ लाहिड़ी और ठाकुर रोशन सिंह को फांसी की सजा सुनाई गई थी।

दल के दस सदस्यों ने इस लूट को अंजाम तक पहुंचाया और अंग्रेजों के खजाने को लूटकर उनके सामने चुनौती पेश की। इस घटना के बाद दल के ज्यादातर सदस्य गिरफ्तार कर लिए गए। दल बिखर गया। आजाद के सामने एक बार फिर दल खड़ा करने का संकट आ गया। कई प्रयासों के बावजूद अंग्रेज सरकार उन्हें पकड़ने में असफल रही थी।

अंग्रेज सरकार ने राजगुरु, भगतसिंह और सुखदेव को फांसी की सजा सुनाई और आजाद इस कोशिश में थे कि उनकी सजा को किसी तरह कम या उम्रकैद में बदलवा दी जाए।एसे ही प्रयास के लिए वे इलाहाबाद पहुंचे।इसकी भनक पुलिस को लग गई और जिस अल्फ्रेड पार्क में वे थे, उसे हजारों पुलिस वालों ने घेर लिया और उन्हें आत्मसमर्पण के लिए कहा, लेकिन आजाद ने शहीद हो जाना ठीक समझा। इसके बाद आजाद ने अपनी बंदूक से ही अपनी जान ले ली और वाकई आखिरी सांस तक अंग्रेजों के हाथ नहीं लगे। 27 फरवरी 1931 को वह अंग्रेजों के साथ लड़ाई करते हुए हमेशा के लिए अपना नाम इतिहास में अमर कर गए।

आचार्या- इशिका

स०शि०म०,नोएडा

ग्रीष्म ऋतु में कुछ सावधानियाँ

- शरीर को पूरी तरह ढक कर ही बाहर निकले।
- ठोस आहार के स्थान पर तरल पदार्थ का सेवन अधिक मात्रा में करें।
- ठंडी तासीर वाली वस्तुओं का प्रयोग करें।

- हल्के रंग के सूती कपड़ों का प्रयोग करें।
- हल्का, ताजा और जल्दी पचने वाला भोजन करें।
- शारीरिक श्रम कम करें।
- नींद पर्याप्त मात्रा में तथा आराम अवश्य करें।
- हल्का-फुल्का व्यायाम अवश्य करें।
- सुबह जल्दी उठकर एवं शाम को टहलते हुए आप प्रकृति से ठंडक अवश्य लें।
- धूप चश्मे का प्रयोग करें।
- घर आने के बाद अपने चेहरे को ठंडे पानी से अवश्य धोये।

आचार्य - लेखराज सिंह

शिशु वाटिका प्रशिक्षण वर्ग

दिनांक-02 जून से 08 जून 2024 तक शिशु वाटिका प्रशिक्षण वर्ग (सहारनपुर)में सम्मिलित सरस्वती शिशु मन्दिर, नोएडा की आचार्या बहिनें।

विश्व योग दिवस

अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस
21 जून

दिनांक-21 जून 2024 को योग दिवस पर विभिन्न स्थानों पर योग ध्यान करते हुए विद्यालय के आचार्य, अभिभावक व भैया /बहिन.......

विश्व पर्यावरण दिवस

दिनांक-05 जून 2024 को विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर पौधरोपण करते हुए भैया/ बहिनों के छायाचित्र।

ग्रीष्मावकाश क्रियाकलाप

जल संरक्षण

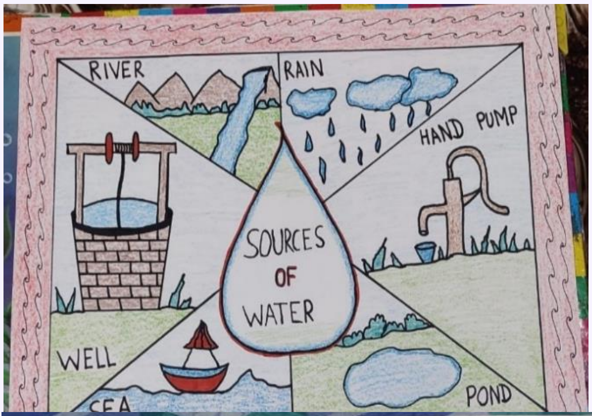

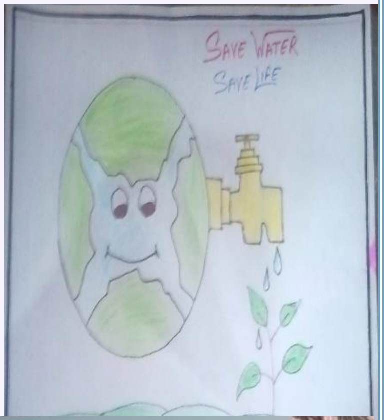

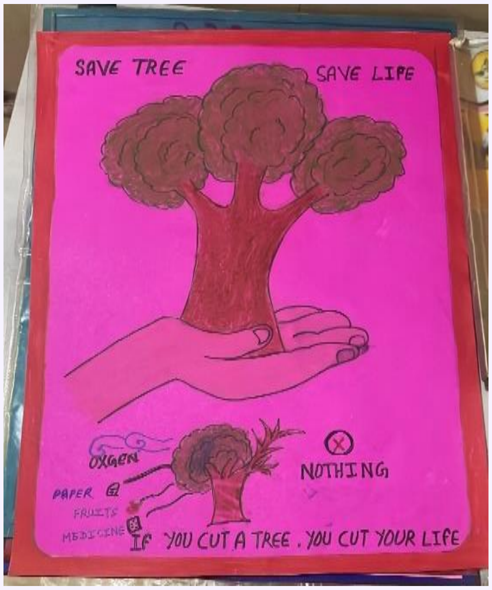

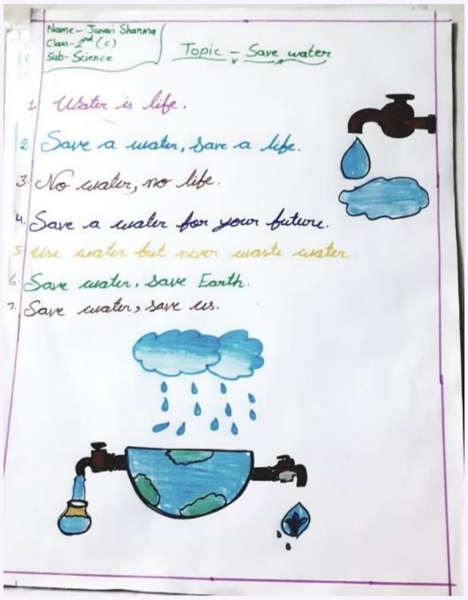

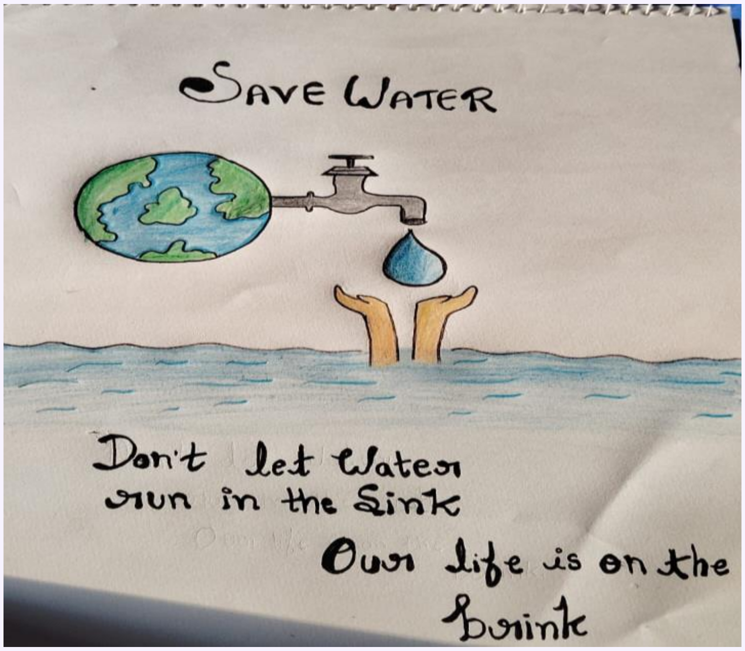
SAVE WATER
Don't let Water run in the Sink
Our life is on the brink

SAVE TREE
PLANT A TREE
AND ADD A NEW FRIEND IN YOUR LIFE.
DON'T CUT OUR Best FRIEND.
2024-6-27 20:02

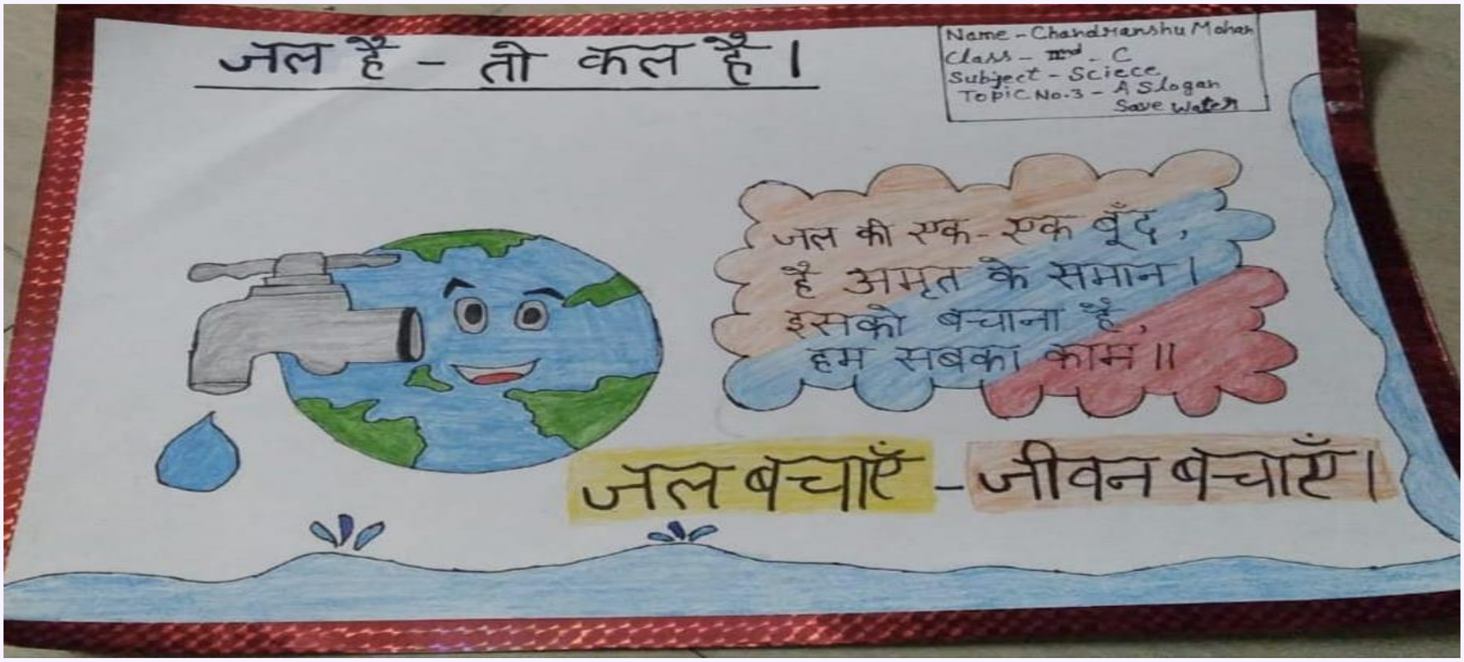
जल है - तो कल है।
Name - Chandranshu Mohan
Class - IIIrd - C
Subject - Sciece
Topic No.3 - A Slogan Save Water
जल की एक-एक बूँद,
है अमृत के समान।
इसको बचाना है,
हम सबका काम॥
जल बचाएँ - जीवन बचाएँ।

SAVE WATER
SAVE LIFE
KIRTI 2nd A

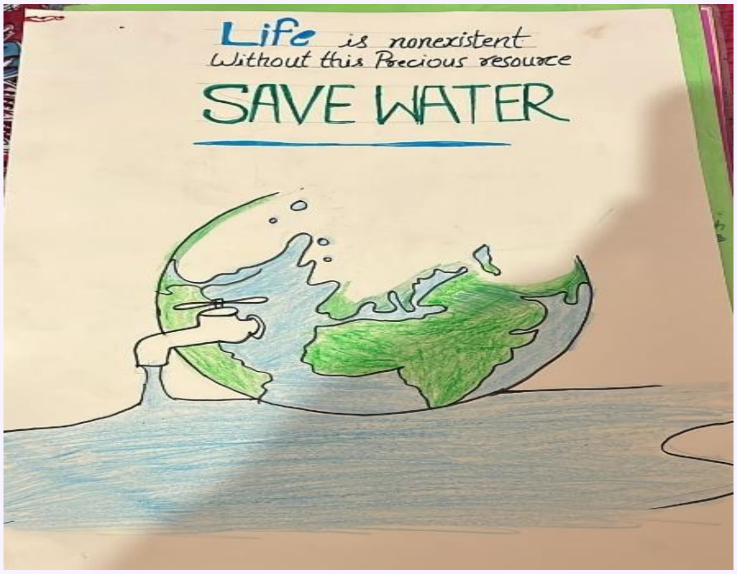
Life is nonexistent
Without this Precious resource
SAVE WATER

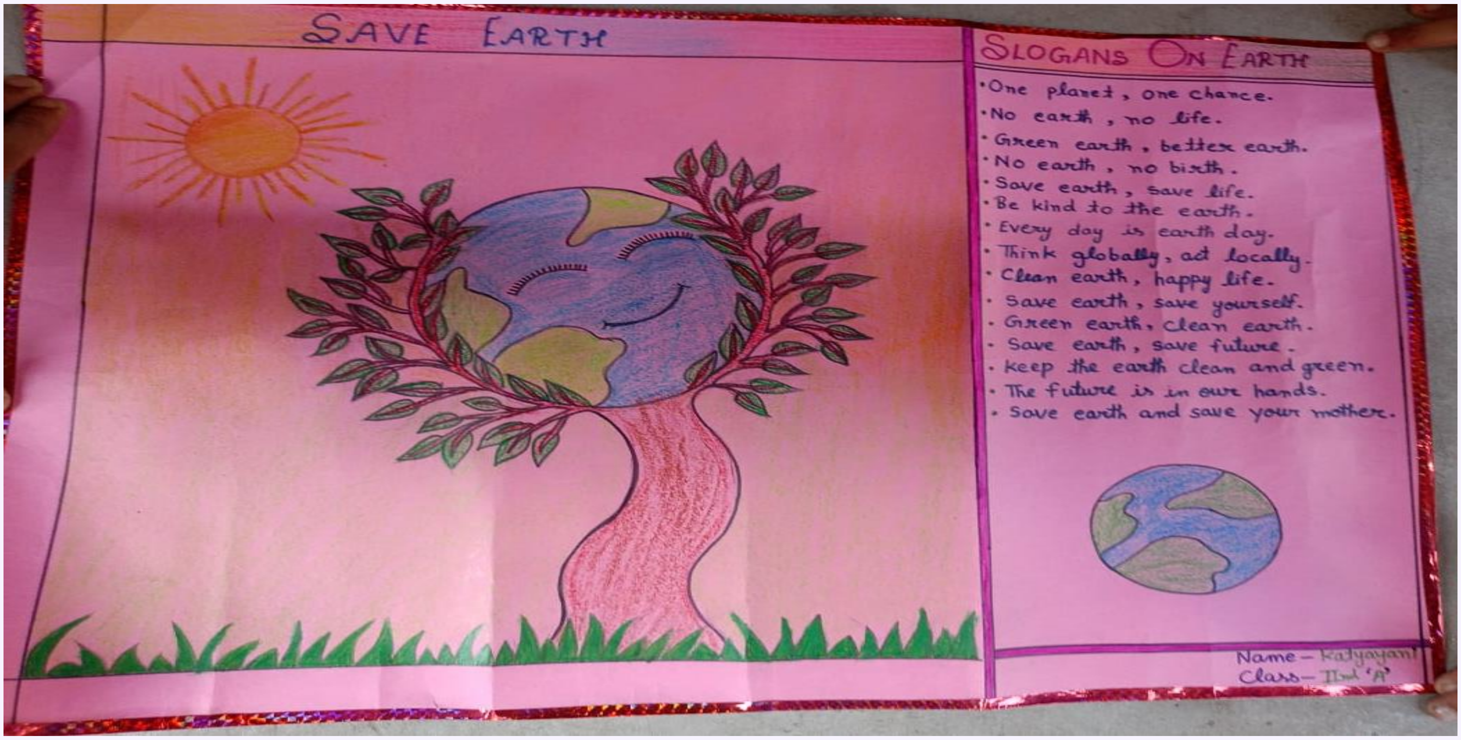
SAVE EARTH
SLOGANS ON EARTH
• One planet, one chance.
• No earth, no life.
• Green earth, better earth.
• No earth, no birth.
• Save earth, save life.
• Be kind to the earth.
• Every day is earth day.
• Think globally, act locally.
• Clean earth, happy life.
• Save earth, save yourself.
• Green earth, clean earth.
• Save earth, save future.
• keep the earth clean and green.
• The future is in our hands.
• Save earth and save your mother.
Name – Katyayani
Class – IInd 'A'

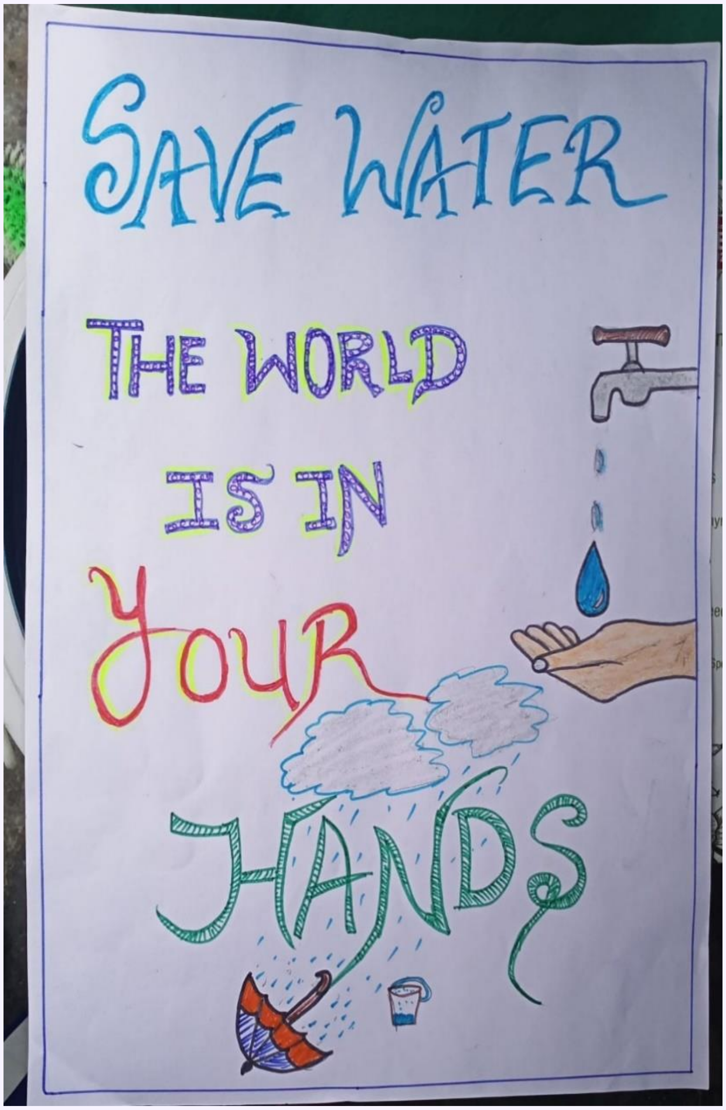
SAVE WATER
THE WORLD
IS IN
YOUR
HANDS

Save
Earth

SAVE
TREES
SAVE
EARTH

कार्यशाला

vivo Y56

विद्या भारती
अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान से सम्बद्ध
सरस्वती शिशु मन्दिर
सी-41, सैक्टर-12
नोएडा, गौतमबुद्ध नगर

विद्या भारती
अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान से सम्बद्ध
सरस्वती शिशु मन्दिर
सी-41, सैक्टर-12
नोएडा, गौतमबुद्ध नगर

सहयोग - भारत विकास परिषद्, नोएडा
श्रीमद्भागवत कथा
ज्ञानयज्ञ

श्रीमद्भागवत कथा

श्रीमद्भागवत कथा

ज्ञानयज्ञ

दिनांक-26 से 29 जून 2024 तक विद्यालय में आयोजित कार्यशाला में प्रान्तीय वर्गों से सीखकर आए विभिन्न विषयों की जानकारी देते हुए आचार्य एवं आचार्या बहिनें ।

बताओ तो जानें

In the above puzzle, 29 meaningful words are written in a line, top, bottom or left and right respectively. Find as many words as you can and send them to the class teacher.

पत्रिका अंक प्रश्नोत्तरी

1. विश्व पर्यावरण दिवस कब मनाया जाता है ?

2. पेज नंबर 9 पर कौन-सी क्रियाकलाप है ?

3. भैया "गुरु शरण" द्वारा लिखी गई कविता का विषय क्या है ?

4. प्रकृति और उसके संसाधनों का संरक्षण कैसे करें ?

5. गुरु पूर्णिमा का पर्व कब मनाया जाता है ?

6. चारों वेदों की व्याख्या किसने की थी ?

7. "केसरी नामक" समाचार पत्र की शुरुआत किसने की ?

8. चारों पुरुषार्थ के नाम बताएं ?

9. चंद्रशेखर आजाद का जन्म स्थान भाबरा अब किस नाम से जाना जाता है ?

10. तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा.. इस सूक्ति का भावार्थ बताए ?

आलोक- कक्षा- द्वितीय से पञ्चम तक के सभी भैया /बहिनों को ई- पत्रिका के पृष्ठ क्रमांक 36 व 37 में दिए गए प्रश्नो के उत्तर कक्षाचार्य जी के व्हाट्सप्प पर दिनांक- 06 जुलाई 24 तक भेजने होंगे, जिससे आपके आने वाली परीक्षा में उनके अंक दिए जा सकें।